भारत के सन्दर्भ में वैकल्पिक शिक्षा की प्रासंगिकता

डॉ राहुल पटेल, व्याख्याता
जिला षिक्षा एवं प्रषिक्षण संस्थान (डायट) सिवान।

सारांश

भारत में वैकल्पिक शिक्षा पारंपरिक शिक्षा प्रणाली की सीमाओं के समाधान के रूप में अत्यधिक प्रासंगिक है। यह रटंत विद्या और एकरूपता के स्थान पर बाल–केंद्रित, लचीली एवं अनुभवात्मक शिक्षण पद्धतियों पर बल देती है। यह दृष्टिकोण रचनात्मकता, समग्र विकास और व्यावहारिक कौशल को बढ़ावा देकर छात्रों को वास्तविक जीवन की चुनौतियों के लिए तैयार करता है। शांतिनिकेतन, मोंटेसरी और गैर–औपचारिक शिक्षा केंद्र इसके सफल उदाहरण हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी इसके सिद्धांतों का समर्थन करती है। इस प्रकार, वैकल्पिक शिक्षा भारत की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने एवं एक समावेशी, कौशल–संपन्न पीढ़ी तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

मुख्य शब्द– वैकल्पिक शिक्षा, NEP 2020, समावेशी शिक्षा, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, विविधता

भारतीय शिक्षा प्रणाली विश्व की सबसे बड़ी प्रणालियों में से एक है। यहाँ लाखों बच्चे विद्यालय जाते हैं, विगत कई दशकों में सरकार के द्वारा सभी तक शिक्षा पंहुचाने हेतु गंभीर प्रयास किए गए हैं एवं विभिन्न प्रकार की योजनाएँ भी चलाई जा रही हैं परन्तु गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा,सभी तक शिक्षा की पहुँच और समानता के गंभीर प्रश्न आज भी मौजूद हैं। ऐसे में वैकल्पिक शिक्षा एक व्यवहारिक और प्रासंगिक विकल्प के रूप में उभरती है। वैकल्पिक शिक्षा से तात्पर्य उन शैक्षिक दर्शनों, पद्धतियों और संस्थानों से है जो पारंपरिक, औपचारिक और मुख्यधारा की शिक्षा प्रणाली से भिन्न हैं। यह शिक्षण को एक मानकीकृत प्रक्रिया के बजाय एक व्यक्तिगत, लचीली और समग्र अनुभव के रूप में देखती है। भारत जैसे विविध और बहुलवादी समाज में वैकल्पिक शिक्षा की प्रासंगिकता अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह शिक्षा की पारंपरिक अवधारणाओं से हटकर एक लचीला, बहुआयामी और बाल–केंद्रित दृष्टिकोण प्रदान करती है।

भारत में वैकल्पिक शिक्षा की प्रासंगिकता के प्रमुख आधार :

1. विविधता को संबोधित करना :

– भारत में सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और भाषाई विविधता है। वैकल्पिक शिक्षा इस विविधता के अनुरूप शिक्षण पद्धतियों को विकसित कर सकती है।

– यह आदिवासी, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा को अनुकूलित करती है।

2. रटंत प्रणाली से मुक्ति :

– भारत की मौजूदा शिक्षा प्रणाली अक्सर रटंत पर केंद्रित है। वैकल्पिक शिक्षा रचनात्मकता, समस्या–समाधान और तार्किक सोच को बढ़ावा देती है।

– इसके तहत प्रोजेक्ट–आधारित शिक्षण, अनुभवात्मक शिक्षा और खोज–आधारित शिक्षण जैसे तरीके शामिल हैं।

3. समावेशिता और लचीलापन वैकल्पिक शिक्षा उन बच्चों के लिए एक सुरक्षित स्थान प्रदान करती है जो मुख्यधारा की प्रणाली में फिट नहीं बैठते दृ चाहे वह विशेष आवश्यकता वाले बच्चे हों, स्कूल छोड़ चुके बच्चे हों, या वे जो पारंपरिक शिक्षा से असंतुष्ट हैं। गैर–औपचारिक शिक्षा केंद्र जैसे कि दिव्यांगजनों के लिए,आदिवासी छात्रों के लिए चलाए जाने वाले विशेष स्कूल, इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

4. बाल–केंद्रित दृष्टिकोण (बिपसक–ब्मदजतपब ।चचतवंबी):' मोंटेसरी, वाल्डोर्फ और प्रोग्रेसिव एजुकेशन जैसी पद्धतियाँ बच्चे की स्वाभाविक जिज्ञासा और सीखने की गति को केंद्र में रखती हैं। यहाँ शिक्षक एक सहायक की भूमिका निभाता है, न कि केवल ज्ञान का संप्रेषक। यह दृष्टिकोण प्रत्येक बच्चे की विशिष्टता को स्वीकार करता है और उसके अनुरूप शिक्षण को अनुकूलित करता है।

5. कौशल विकास :

– रोजगारोन्मुखी शिक्षा पर जोर देकर वैकल्पिक शिक्षा युवाओं को रोजगार के योग्य बनाती है।

– इसमें व्यावसायिक प्रशिक्षण, कला, संगीत, खेल और अन्य रुचि–आधारित कौशल शामिल हो सकते हैं।

6. सामाजिक और भावनात्मक विकास :

– वैकल्पिक शिक्षा बच्चों के सामाजिक और भावनात्मक विकास पर ध्यान केंद्रित करती है, न कि केवल अकादमिक उपलब्धि पर।

– इसमें नैतिक शिक्षा, सहयोग, सहानुभूति और समुदायिक भावना को बढ़ावा दिया जाता है।

7. समग्र विकास : वैकल्पिक शिक्षा केवल अकादमिक उत्कृष्टता तक सीमित नहीं है। यह बच्चे के बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक, शारीरिक और नैतिक विकास पर समान रूप से जोर देती है। कला, संगीत, शिल्प, खेल और योग को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाया जाता है। यह छम्च् 2020 के उद्देश्यों, जो समग्र विकास और बहु–विषयक दृष्टिकोण पर जोर देता है, के साथ सहमति में है।

8. स्थानीय संदर्भ में शिक्षा :

– यह स्थानीय भाषाओं, संस्कृति और पर्यावरण को शिक्षा का हिस्सा बनाती है, जिससे शिक्षा अधिक प्रासंगिक और रोचक बनती है।

भारतीय संदर्भ में वैकल्पिक शिक्षा के उदाहरण एवं पहल

भारत में वैकल्पिक शिक्षा की अवधारणा नई नहीं है। इसकी जड़ें हमारे प्राचीन गुरुकुल परंपरा में देखी जा सकती हैं, जहाँ शिक्षा जीवन के साथ एकीकृत थी।

रबीन्द्रनाथ टैगोर का शांतिनिकेतनः टैगोर ने प्रकृति के सान्निध्य में कला, संगीत और रचनात्मकता को केंद्र में रखकर एक समग्र शिक्षा मॉडल प्रस्तुत किया। उनका मानना था कि शिक्षा मुक्त और आनंदमय होनी चाहिए।

जिद्दू कृष्णमूर्ति स्कूल : ये स्कूल तुलनात्मक अध्ययन, आत्म–जांच और देशीय और वैश्विक संदर्भों को समझने पर जोर देते हैं, ताकि एक समग्र मानवीय दृष्टिकोण का विकास हो सके।

मोंटेसरी और वाल्डोर्फ स्कूल : ये पद्धतियाँ अब भारत के शहरी और अर्ध–शहरी क्षेत्रों में तेजी से लोकप्रिय हो रही हैं, जो बच्चे के स्वाभाविक विकास और रचनात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करती हैं।

सुदूर और आदिवासी शिक्षा में नवाचार : एकलव्य जैसे संगठनों ने आदिवासी समुदायों के लिए ऐसी शिक्षा मॉडल विकसित किए हैं जो स्थानीय ज्ञान, संस्कृति और पर्यावरण को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाते हैं। इससे शिक्षा अधिक प्रासंगिक और सशक्तिकरण का माध्यम बनती है।

होमस्कूलिंग और ऑनलाइन लर्निंग : टेक्नोलॉजी के विकास ने होमस्कूलिंग और डिजिटल लर्निंग प्लेटफॉर्म्स को बढ़ावा दिया है, जो पारंपरिक स्कूलिंग का एक लचीला विकल्प प्रदान करते हैं। कोविड–19 महामारी ने इसकी संभावनाओं को और बढ़ा दिया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और वैकल्पिक शिक्षा

NEP 2020 वैकल्पिक शिक्षा के कई सिद्धांतों को मान्यता और समर्थन देता है। यह नीतिः

'बहु–विषयक शिक्षा' पर जोर देती है, जो वैकल्पिक शिक्षा के समग्र दृष्टिकोण के अनुरूप है।

'कला और खेल' को पाठ्यक्रम में फिर से एक महत्वपूर्ण स्थान देती है।

'प्रोजेक्ट–आधारित शिक्षण' और 'खोज–आधारित शिक्षण' को बढ़ावा देती है।

'व्यावसायिक शिक्षा' को मुख्यधारा में शामिल करने की बात करती है, जो कौशल विकास पर वैकल्पिक शिक्षा के लक्ष्य से मेल खाती है।

इस प्रकार, NEP 2020 वैकल्पिक शिक्षा के लिए एक व्यापक नीतिगत ढाँचा प्रदान करती है, जिससे इसे मुख्यधारा में एकीकृत करने का मार्ग प्रशस्त होता है।

यद्यपि वैकल्पिक शिक्षा के मार्ग में अनेक चुनौतियाँ हैं जिनमे वित्तीय आभाव एवं सामाजिक मान्यता की कमी काफी महत्त्वपूर्ण है एवं इन चुनौतियों के समाधान के लिए सरकार, नागरिक समाज और निजी क्षेत्र के बीच सहयोग आवश्यक है। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में वैकल्पिक पद्धतियों को शामिल किया जाना चाहिए।

'निष्कर्ष'

भारत के शैक्षिक परिदृश्य में वैकल्पिक शिक्षा एक विलासिता नहीं, बल्कि एक आवश्यकता बनती जा रही है। यह उन लाखों बच्चों के लिए आशा की किरण है जो वर्तमान प्रणाली में खुद को पीछे छूटता हुआ पाते हैं। यह रचनात्मकता, नवाचार और महत्वपूर्ण सोच को बढ़ावा देकर भारत को एक ज्ञान–आधारित अर्थव्यवस्था बनाने के सपने को साकार करने में मदद कर सकती है। वैकल्पिक शिक्षा, मुख्यधारा की शिक्षा का स्थान लेने के बजाय, उसके पूरक के रूप में कार्य कर सकती है, देश को एक विविध, लचीली और अधिक मानवीय शिक्षा प्रणाली की ओर ले जा सकती है। एक ऐसी प्रणाली जो हर बच्चे में निहित संभावना को पहचाने और उसे विकसित करने का अवसर प्रदान करे।

संदर्भ

1. Government of India. (1966). Report of the Education Commission (1964-66): Education and National Development. (Kothari Commission Report).

2. Government of India. (2020). National Education Policy 2020. Ministry of Human Resource Development.

3. UNESCO. (2020). Global Education Monitoring Report 2020: Inclusion and education: All means all. United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization.

4. Krishna, J. (1953). Education and the Significance of Life. Harper & Brothers.

5. Tagore, R. (1961). The Centre of Indian Culture. Visva-Bharati Publishing.

6. Montessori, M. (1949). The Absorbent Mind. The Theosophical Publishing House.

7. NCERT. (2006). Position Paper on National Focus Group on Education of Children with Special Needs. National Council of Educational Research and Training.

8. Batra, P. (2010). "Social Science Learning in Schools: Perspective and Challenges". In Social Science Learning in Schools: Perspective and Challenges (pp. 1-24). Sage Publications.

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation